
आलस्य और अलबेलापन - 52

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी खिलायेगा।

» _ » लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। (18.01.1996)

➤➤ बाप के साथी

- » _ » जो बाप के साथी है सच्चे है तो उन्हें बाबा दाल रोटी जरूर खिलायेगा。
 - जो निश्चय बुद्धि है
 - जिनको ये निश्चय पक्का है कि साथ कौन है
 - **जिनका हृदय स्वच्छ है सच्चा है**
- » _ » कैसी भी परिस्थिति हो हालात हो बाबा दाल रोटी जरूर खिलायेगा
- » _ » हृदय मे अगर थोडा भी झूठ है अपवित्रता है
 - तो भगवान की मदद नहीं मिलती है।
- » _ » भगवान की मदद उनको मिलती है
 - **जिनका हृदय साफ है सच्चा है।**
- » _ » भगवान हमारी जो भी जरूरतें है बाबा उन्हें जरूर पूरी करता है।
 - जो मांग है उसे पूरी नहीं करता है।
- » _ » दाल रोटी का अर्थ केवल खाने की बात नहीं है।
- » _ » सच्चाई को अपने अंदर धारण करना है
- » _ » जितना हृदय स्वच्छ होता जायेगा सफाई से भरता जायेगा
 - ईश्वरीय दया कृपा होने लगेगी।
 - **स्वतः ही पुरुषार्थ आगे बढ़ता जायेगा**
- » _ » जो बाप के साथी है व जिन्होंने भगवान को साथी बनाया
 - **जीवन के कदम कदम पर पल पल उसके साथ का अनुभव होना हर परिस्थिति मे**
 - हृदय को कृतज्ञता के भाव से भर देना
 - धन्यवाद के भाव
 - जो भोजन मिल रहा है उसके प्रति भी अनुग्रह शुक्रिया धन्यवाद

➤➤ भोजन

»» _ »» भोजन के दो प्रकार है

→ केवल शाकाहार केवल मांसाहार नहीं

■ हिंसक भोजन

■ अहिंसक भोजन

»» _ »» हिंसक भोजन

→ जिस चित्त में क्रोध भरा है

■ क्रोध की दशा हो

■ नेजेटिविटी हो

»» _ »» इस तरह के भाव हृदय में भरे हुए हैं व उस अवस्था में स्वीकार किया जा रहा है वो सभी भोजन हिंसक भोजन है

»» _ »» अहिंसक भोजन

→ इसके तीन तल हैं

■ शरीर के तल पर

■ मन के तल पर

■ चित्त के तल पर

»» _ »» शरीर के तल पर अहिंसक भोजन

→ जिस में उत्तेजना नहीं है

■ जितनी उत्तेजना होगी उतने ही हिंसक भाव मन में पैदा

→ जो सादा है

→ जो स्वास्थ्यपूर्ण हो

→ जो प्रसन्न भाव से स्वीकार किया जाए।

»» _ »» मन के तल पर

→ कृतज्ञता का भाव है

→ शुक्रिया का भाव है

■ केवल भोजन के लिए नहीं

■ हर चीज के लिए शुक्रिया

■ नया जीवन दिया

■ सृष्टि के प्रति

■ फिर से नयी सुबह

■ फिर से नया अमृतवेला

■ गलतियों को सुधारने का अवसर मिला

■ श्रेष्ठ पुरुषार्थियों का संग मिला

■ श्रेष्ठ आत्माओं का संग मिला

■ महान आत्माओं का संग मिला

■ परमात्मा अवतरण भूमि मिल जाना

→ हृदय को अहो भाव से भर देना

→ हर बात के लिए शुक्रिया

■ Attitude Should Be Gratitude

» _ » चित्त के तल पर

→ जो प्रसन्न मन भाव से स्वीकार किया

→ प्रसाद पूर्ण भाव से स्वीकार किया जाता है

→ श्रेष्ठतम भाव से स्वीकार किया जाता है

» _ » भोजन स्वीकार करते हुए आनन्दपूर्ण स्थिति हो प्रेम पूर्वक स्थिति हो

→ ये भाव हो ये यज्ञ का भोजन है।

→ जितना जरूरी हो उतना ही ले।

→ एक टुकड़ा भी नहीं वेस्ट न जाए।

» _ » जो उसका यज्ञ है व जिसे उसने स्वयं चुना है तो उनके हृदय में जो भाव उत्पन्न हो रहे हैं क्या उसे वो नहीं जानेंगा ?

→ सब कुछ देखेगा

→ कुछ भी करे

→ उससे कुछ भी छिपा नहीं है

» _ » किस भाव से खा रहे हैं ??

→ जो मिल रहा है उसे कृतज्ञता से भर दो हृदय को

→ उपकार क्या क्या उसने किए हैं वो सब याद करना

→ स्वमान की स्थिति

→ शांत चित्त हो

→ प्रसाद पूर्ण भाव हो

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » डायमण्ड जुबली मना रहे हो, डायमण्ड जुबली का अर्थ है - डायमण्ड बनना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना। जितना सेवा का उमंग है उतना वैराग्यवृत्ति का अटेन्शन नहीं है। इसमें अलबेलापन है। चलता है. होता है. हो जायेगा. समय आयेगा तो ठीक हो जायेगा. तो समय आपका शिक्षक है या बाबा शिक्षक है? कौन है?

» _ » अगर समय पर परिवर्तन करेंगे तो आपका शिक्षक तो समय हो गया! आपकी रचना आपका शिक्षक हो - ये ठीक है? तो जब ऐसी परिस्थिति आती है तो क्या कहते हो? **समय पर ठीक कर लुंगी, हो जायेगा। बाप को भी दिलासा देते हैं - फिकर नहीं करो, हो जायेगा। समय पर बिल्कुल आगे बढ़ जायेंगे।** तो समय को शिक्षक बनाना - यह आप मास्टर रचयिता के लिए शोभता है? अच्छा लगता है? नहीं। **समय रचना है, आप मास्टर रचयिता हो। (03.04.1996)**

➤➤ समय रचना है आप मास्टर रचयिता हो

» _ » हमारा शिक्षक समय न बन जाए

→ जो शिक्षायें बाबा ने दी हैं वो तुरंत धारण करनी हैं

→ जिस दिन बुद्धि में प्रकाश आ गया

→ जिस दिन समझ में आ जायेगी

■ अचानक कुछ और ही घटित हो जायेगा उस दिन Unlightment हो जायेगी

» _ » समय का इंतजार नहीं करना जो कुछ कहा हुआ है अब तक तुरंत धारण करना है।

➤➤ डायमंड बनना

» _ » डायमंड बनना अर्थात बेहद के वैरागी बनना।

→ सेवा करने के लिए तत्पर हैं परंतु उतना ही वैराग्यवृत्ति भी हो।

■ कह दिया जाए सब कुछ रोक दो

■ बैठ जाओ तपस्या करो

■ सब सेवा स्टोप

■ बिल्कुल हलचल न हो

■ तब बैचेनी न हो

» _ » निरंतर वैराग्य वृत्ति हमारे हृदय में हो।

» _ » समय पर हो जायेगा ये समय की बलिहारी होगी हमारी नहीं होगी

→ समय की विजय होगी हमारी नहीं

→ तब जो करेंगे वो दिल से नहीं करेंगे

→ जबरदस्ती होगा मजबूरी से होगा

→ जब वैराग्य होगा तब पीडा होगी

■ जिस चीज को पकड़ रखा है

■ जिसको अपना मान लिया है

■ ये देह मेरा है मान लिया

■ मेरा वैभव है मेरी वस्तु है

» _ » जब समय छुड़ायेगा तो पीडा होगी ।

→ इसके लिए पहले ही मन से परित्याग कर दो

» _ » मन से जिस से EMOTIONAL अटैचमेंट है उनसे डिटैचमेंट करनी है

→ ऊपर से करने का कुछ नहीं है

→ ये अंदर का खेल है

»→ _ »→ अनुकूल परिस्थितियों हो जाए उसका इंतजार नही करना वो समय की बलिहारी है।

→ जो भी परिस्थिति मे हम है

→ जिन लोगो के बीच हम है

■ उन्ही के बीच मे रहकर स्वयं को श्रेष्ठतम स्थिति पर स्थित कराना है।

»→ _ »→ प्रतिकूल परिस्थितियों मे ही सम्पूर्ण बनना है।

»→ _ »→ न स्थान बदलेगा न व्यक्ति बदलेंगे न परिस्थिति बदलेगी तुम्हें को ही बदलना हैं।

